

अन्तर-बाहिर परिग्रह टारि, परम दिगम्बर-व्रत को धारि ।  
 सर्व जीव-हित-राह दिखाय, नमौ अनन्त वचन-मन लाय ॥  
 सात तत्त्व पंचास्तिकाय, अरथ नवों छ दरब बहु भाय ।  
 लोक अलोक सकल परकास, बन्दौ धर्मनाथ अविनाश ॥  
 पंचम चक्रवर्ती निधि भोग, कामदेव द्वादशम मनोग ।  
 शान्तिकरन सोलम जिनराय, शान्तिनाथ बन्दौ हरषाय ॥  
 बहु थुति करे हरष नहिं होय, निन्दे दोष गहैं नहिं कोय ।  
 शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बन्दौ कुन्थुनाथ शिव-भूप ॥  
 द्वादश गण<sup>१</sup> पूजैं सुखदाय, थुति वन्दना करैं अधिकाय ।  
 जाकी निज-थुति कबहुँ न होय, बन्दौ अर-जिनवर-पद दोय ॥  
 पर-भव रत्नत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह-समय वैराग ।  
 बाल-ब्रह्म पूरन-व्रत धार, बन्दौ मल्लिनाथ जिनसार ॥  
 बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकान्त करै पग लाग ।  
 नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहि, बन्दौ मुनिसुव्रत व्रत देहि ॥  
 श्रावक विद्यावन्त निहार, भगति-भाव सों दियो अहार ।  
 बरसी रतन-राशि तत्काल, बन्दौ नमिप्रभु दीन-दयाल ॥  
 सब जीवन की बन्दी छोर, राग-द्वेष द्वय बन्धन तोर ।  
 रजमति तजि शिव-तिय सों मिले, नेमिनाथ बन्दौ सुखनिले ॥  
 दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनिधार ।  
 गयो कमठ शठ मुख कर श्याम, नमों मेरु-सम पारसस्वाम ॥  
 भव-सागर तैं जीव अपार, धरम-पोत में धरे निहार ।  
 डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान बन्दौ बहु बार ॥

(दोहा)

चौबीसों पद-कमल-जुग, बन्दौ मन-वच-काय ।

‘द्यानत’ पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय ॥